निजामपूर जैताणे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे

आदर्श कला महाविद्यालय

निजामपूर जैताणे ता साक्री जि धुळे

NAAC Reaccredited

हिंदी विभाग

आयोजित

Add on Course

On

हिंदी भाषा का व्याकरणिक अभ्यास

1 अगस्त 2019 से 30 अगस्त 2019

निजामपूर जैताणे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे

आदर्श कला महाविद्यालय

निजामपूर जैताणे ता साक्री जि धुळे

NAAC Reaccredited

Brochure

2019-2020

Add on Course

On

हिंदी भाषा का व्याकरणिक अभ्यास

1 अगस्त 2019 से 30 अगस्त 2019

हिंदी विभाग

डॉ. व्ही.जी.गुरव
समन्वयक

डॉ. ए. पी. खैरनार
प्राचार्य

महाविद्यालय का परिचय

आदर्श कला महाविद्यालय ग्रामीण परिवेश में स्थित यह वह महाविद्यालय है, जिस महाविद्यालय को जगन्नाथ कडवादास शाह जी के वैचारिक संस्कार मिले हैं। इनके बेटे ॲडव्होकेट बाबासाहेब शरदचंद्र शाह जी की दूरदर्शिता ने संस्था एवं संपूर्ण आदर्श परिवार को वटवृक्ष के रूप में परिवर्तित किया है। इसी दूरदर्शिता का परिणाम है कि सन् 1995 ई. में आदर्श कला, महाविद्यालय की स्थापना हुई है। संस्था के अध्यक्ष तथा ॲडव्होकेट बाबासाहेब शरदचंद्र शाह जी ने इसी वैचारिक प्रतिबद्धता एवं विरासत का व्यापक धरातल पर निर्वहन किया है। विचारणीय है कि बाबासाहेब के समाज सापेक्षी मार्गदर्शन ने महाविद्यालय को विशिष्ट ऊंचाई तक ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। महाविद्यालय की उपलब्धियों के कारण ही कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उमवि जलगांव विश्वविद्यालय ने ग्रामीण परिवेश में अच्छा काम करने के कारण महाविद्यालय की सराहना की है। महाविद्यालय को नैक (NAAC) पुनर्मूल्यांकन में भी स्थान प्राप्त हुआ है।

इस महाविद्यालय का हिंदी विभाग विगत पिछले 25-26 सालों से निरंतर हिंदी की सेवा कर रहा है तथा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु भी सदैव तत्पर है। इस विभाग से शिक्षा प्राप्त करके गये हुए कई छात्र आज सरकारी विभागों में, महाविद्यालयों में बड़े ओहदे पर कार्य कर रहे हैं। यही कार्य आज भी निरंतर रुप से जारी है।

हिंदी भाषा एवं संप्रेषण के साधन के पाठयक्रम के संदर्भ मे

किसी भी "भाषा" के अंग-प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन "व्याकरण" कहलाता है, जैसे कि शरीर के अंग प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन "शरीरशास्त्र" और किसी देश प्रदेश आदि का वर्णन "भूगोल"। यानी व्याकरण किसी भाषा को अपने आदेश से नहीं चलाता घुमाता, प्रत्युत भाषा की स्थिति प्रवृत्ति प्रकट करता है। "चलता है" एक क्रियापद है और व्याकरण पढ़े बिना भी सब लोग इसे इसी तरह बोलते हैं; इसका सही अर्थ समझ लेते हैं। व्याकरण इस पद का विश्लेषण करके बताएगा कि इसमें दो अवयव हैं - "चलता" और "है"। फिर वह इन दो अवयवों का भी विश्लेषण करके बताएगा कि (च् अ ल् अ त् आ) "चलता" और (ह अ इ उ) "है" के भी अपने अवयव हैं। "चल" में दो वर्ण स्पष्ट हैं; परन्तु व्याकरण स्पष्ट करेगा कि "च" में दो अक्षर है "च्" और "अ"। इसी तरह "ल" में भी "ल्" और "अ"। अब इन अक्षरों के टुकड़े नहीं हो सकते; "अक्षर" हैं ये। व्याकरण इन अक्षरों की भी श्रेणी बनाएगा, "व्यंजन" और "स्वर"। "च्" और "ल्" व्यंजन हैं और "अ" स्वर। चि, ची और लि, ली में स्वर हैं "इ" और "ई", व्यंजन "च्" और "ल्"। इस प्रकार का विश्लेषण बड़े काम की चीज है; व्यर्थ का गोरखधंधा नहीं है। यह विश्लेषण ही "व्याकरण" है व्याकरण का दूसरा नाम "शब्दानुशासन" भी है। वह शब्दसंबंधी अनुशासन करता है , बतलाता है कि किसी शब्द का किस तरह प्रयोग करना चाहिए। भाषा में शब्दों की प्रवृत्ति के अनुसार व्याकरण शब्दप्रयोग का निर्देश करता है। यह भाषा पर शासन नहीं करता, उसकी स्थितिप्रवृत्ति के अनुसार लोकशिक्षण करता है।

पाठयक्रम का उद्देश्य

- छात्रों को हिंदी भाषा के व्याकरण से अवगत कराना।
- हिंदी भाषा शुद्ध लिखने, शुद्ध बोलने में व्याकरण की आवश्यकता के बारे में छात्रों को जानकारी देना।
- छात्रों को हिंदी भाषा पढ़ने के लिए प्रेरित करना।
- छात्रों को हिंदी भाषा की व्याकरण की बारीकियों से अवगत कराना।
- हिंदी भाषा सीखने में व्याकरण की महत्ता बताना।

पात्रता

- उम्मीदवार 12 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण चाहिए।
- जो उम्मीदवार बी.ए. प्रवेश के लिए पात्र है वह भी इस परीक्षा के लिये पात्र है।

पाठयक्रम शुलक

यह पाठ्यक्रम निशुल्क है।

चयन मानदंड

पहले उम्मीदवार को प्रवेश पहले दिया जाएगा।

नतिजा एवं रोजगार के लिये उपयोगी

- हिंदी राजाभाषा अधिकारी बनने के लिए महत्वपूर्ण शिक्षा
- हिंदी अनुवादक बनने के लिए महत्त्वपूर्ण
- हिंदी सेट, नेट पास होने के लिए महत्त्वपूर्ण
- MPSC, UPSC, के लिए महत्त्वपूर्ण।

कृपया और जानकारी के लिये संपर्क करे

डॉ. व्ही.जी.गुरव: फोन नंबर: 9423940609

Note: Certificate will be awarded only after passing examinations